Padma Vibhushan

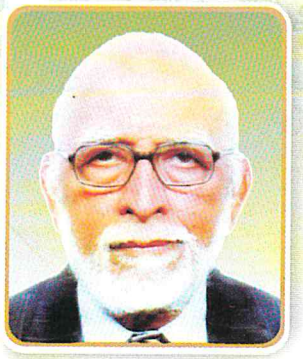

Prof. Malur Ramaswamy Srinivasan

Prof. M.R. Srinivasan is a pioneer in the field of nuclear power development. He was Chairman, Atomic Energy Commission, Secretary, Department of Atomic Energy and Founder Chairman, Nuclear Power Corporation of India. He is presently member, Atomic Energy Commission and National Professor in Nuclear Engineering in the Nuclear Power Corporation of India.

2. Bom on January 5, 1930, Prof Srinivasan received his Bachelor of Engineering degree from University of Mysore in 1950. He secured the Master of Engineering degree in 1952 and the Doctor of Philosophy degree in 1954, from McGill University, Montreal, Canada. He was a member of Dr Homi Bhabha's team which built India's first research reactor, Apsara. He was the Principal Project Engineer of India's first nuclear power station built at Tarapur. This power station has operated successfully for over forty five years and produces the lowest cost non-hydro power. He became the Chief Project Engineer, Madras Atomic Power Station, which was India's first indigenously built nuclear power station. On its commissioning, India joined a small group of countries namely U.S.A., U.S.S.R., Britain, France, Canada and Japan which designed and built their own nuclear power units.

3. In his capacity as Director, Power Projects Engineering Division, and Chairman, Nuclear Power Board of the Department of Atomic Energy, Prof. Srinivasan had full responsibility for planning all nuclear power projects in the country and for overseeing their operations. Building up a comprehensive national capacity for manufacturing all equipments and producing all the requisite materials from within the country were major achievements. Nuclear power projects were taken up for execution at several sites and the programme entered an industrial scale. Prof. Srinivasan became Chairman Atomic Energy Commissioner in 1987. The Nuclear Power Corporation was created in 1987 with him as Founder Chairman. He successfully led the negotiations with the Soviet Union on the Kundankulam Project.

4. After retirement, Prof. Srinivasan was Senior Advisor to the International Atomic Energy Agency and later Member, Planning Commission. He was Member National Security Advisory Board for two terms. He played an important role in negotiating the U.S.-India Nuclear agreement of 2008. He played a major role in breaking the impasse over commissioning of Kudankulam, due to local agitation.

5. Prof. Srinivasan is a recipient of many awards and honours, including honorary doctorates. Government of India conferred the Padma Shri on him in 1984 and Padma Bhushan in 1990. He received the Life time achievement award of the Indian Nuclear Society, the Life time contribution award of the Indian National Academy of Engineering and the Homi Bhabha Gold Medal of the Indian Science Congress. He has written prolifically on nuclear energy issues, spoken at various fora and is the most visible face amongst nuclear scientists in the electronic media.



प्रो. मलूर् रामस्वामि श्रीनिवासन्

प्रो0 मलूर् रामस्वामि श्रीनिवासन्, नाभिकीय ऊर्जा विकास के क्षेत्र में पथप्रदर्शक हैं। आप परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव और भारतीय नाभिकीय ऊर्जा निगम के संस्थापक अध्यक्ष थे। इस समय आप परमाणु ऊर्जा आयोग के सदस्य और भारतीय नाभिकीय ऊर्जा निगम में नाभिकीय इंजीनियरिंग में राष्ट्रीय प्रोफेसर हैं।

2. आपका जन्म जनवरी 05, 1930 को हुआ। आपने मैसूर विश्वविद्यालय से वर्ष, 1950 में इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। आपने मैकगिल विश्वविद्यालय, मोंट्रियल, कनाडा से वर्ष, 1952 में इंजीनियरिंग में मास्टर की डिग्री और वर्ष, 1954 में डॉक्टर ऑव फिलोसॉफी की डिग्री प्राप्त की। आप होमी भाभा की टीम के सदस्य थे, जिसने भारत के पहले रिसर्च रिएक्टर, अप्सरा का निर्माण किया। आप तारापुर में निर्मित भारत के पहले नाभिकीय ऊर्जा स्टेशन के प्रिंसिपल प्रोजेक्ट इंजीनियर थे। यह पावर स्टेशन पैंतालिस से अधिक वर्षों से सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है और इससे न्यूनतम कीमत पर नॉन-हाइड्रो पावर का उत्पादन किया जाता है। आप मद्रास परमाणु ऊर्जा स्टेशन के मुख्य परियोजना इंजीनियर बने। यह स्टेशन स्वदेशी आधार पर निर्मित भारत का पहला नाभिकीय ऊर्जा स्टेशन था। इसके शुरू होने से भारत उन देशों के छोटे से ग्रुप अर्थात् यू.एस.ए., यू.एस.एस.आर., ब्रिटेन, फ्रांस, कनाडा और जापान में शामिल हो गया जिन्होंने अपनी स्वयं की नाभिकीय ऊर्जा यूनिटों का डिज़ाइन तैयार किया और उनका निर्माण किया।

3. निदेशक, ऊर्जा परियोजना इंजीनियरिंग प्रभाग और अध्यक्ष, नाभिकीय ऊर्जा बोर्ड, परमाणु ऊर्जा विभाग के पदों पर रहते हुए देश में सभी नाभिकीय ऊर्जा परियोजनाओं की योजना बनाने और उनके परिचालनों पर नज़र रखने की आपकी पूरी जिम्मेदारी थी। देश के अंदर सभी उपकरणों का विनिर्माण करने और हर प्रकार की अपेक्षित सामग्री का उत्पादन करने के लिए व्यापक राष्ट्रीय क्षमता का निर्माण करना आपकी मुख्य उपलब्धियां थीं। नाभिकीय ऊर्जा परियोजनाएं, कई स्थानों पर निष्पादन के लिए शुरू की गईं और इस कार्यक्रम ने औद्योगिक क्षेत्र का रूप ले लिया। आप वर्ष, 1987 में परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष बने। वर्ष, 1987 में नाभिकीय ऊर्जा निगम का सृजन किया गया जिसके आप संस्थापक अध्यक्ष थे। आपने कुंदनकुलम परियोजना के लिए सोवियत संघ के साथ सफल वार्ताओं का नेतृत्व किया।

4. सेवानिवृत्ति के बाद आप अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के वरिष्ठ सलाहकार और बाद में योजना आयोग के सदस्य बने। आप दो कार्यकालों के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड के सदस्य थे। वर्ष, 2008 में यू0एस0-भारत नाभिकीय करार पर समझौता कराने में आपने महत्वपूर्ण भूमिका निबाही। स्थानीय आंदोलन के कारण कुंदनकुलम परियोजना को शुरू करने में आए गतिरोध को दूर करने में आपने मुख्य भूमिका निबाही।

5. आपको कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें मानद डॉक्टरेट की डिग्री शामिल है। भारत सरकार ने वर्ष,1984 में आपको पद्मश्री और वर्ष, 1990 में पद्मभूषण प्रदान किया। आपको भारतीय नाभिकीय सोसाइटी का लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार, भारतीय राष्ट्रीय इंजीनियरिंग अकादमी का आजीवन योगदान पुरस्कार और भारतीय विज्ञान कांग्रेस का होमी भाभा स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। आपने नाभिकीय ऊर्जा संबंधी मुद्दों पर स्वतंत्र रूप से लिखा, विभिन्न मंचों पर धाराप्रवाह भाषण दिया और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में नाभिकीय वैज्ञानिकों में आपका सर्वाधिक जाना-पहचाना चेहरा है।